लापता व्यक्ति

देवेन्द्र शर्मा

एक व्यक्ति जो यात्रा पर गया है और उसके बारे में कुछ पता नहीं है, एक व्यक्ति जिसने अपनी वापसी की यात्रा आरम्भ की है परन्तु वापस नहीं पहुँचा, विदेश गए व्यक्ति की स्थिति, सकुशलता आदि। अपने निकट संबंधियों के विषय में इस प्रकार के प्रश्न पूछते समय व्यक्ति के मन में ये सब तथा इनसे संबंधित अनेक चिंताएँ रहती हैं। ये सब चिंताएँ तब अधिक थी जब प्राचीन युग में वर्तमान युग की अपेक्षा इतने अधिक साधन नहीं थे। वर्तमान युग में यातायात के साथ-साथ सूचना व तकनीक में उन्नति के साथ-साथ सशक्त परिवर्तन आया है, लेकिन इन सब के बाद भी कई बार ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है, जहाँ पर यात्रा पर गया हुआ व्यक्ति न तो अपने गंतव्य स्थान पर पहुँचा है और न ही उसके बारे में कोई सूचना उपलब्ध है।

आधुनिक संसार में अपराध की घटनाओं में लगातार वृद्धि हो रही है, जहाँ धन ऐंठने के लिए अपरहण आदि अनेक घटनाएँ होती हैं। अपहरण के व्यक्ति के विषय में या लापता जातक के विषय में यह चिंता थी, क्या वह जीवित है या मर गया है? या वापस आने वाला है, क्या उसके साथ हिंसा हुई है? क्या उसके सुरक्षित वापस आने का समय आने वाला है, आदि सब रहस्यों से ढके क्षेत्र हैं।

इस प्रकार के प्रश्नों में लग्न से लापता व्यक्ति के विषय में पता चलता है लग्न ऐसे यात्री या व्यक्ति को दर्शाता है जिसकी वापसी प्रत्याशित है।

चतुर्थ भाव - लापता व्यक्ति प्रसन्नता एवं सकुशलता दर्शाता है।

सप्तम भाव - उसका रास्ता या मार्ग है। सातवाँ भाव मार्ग पर पथिक द्वारा सामना की गई कठिनाइयाँ या उपलब्धियाँ भी दर्शाता है।

मूक प्रश्न में यदि स्थिर लग्न को मंद गति ग्रह (गुरू व शनि) देखे तो आमतौर पर प्रश्न लापता व्यक्ति या उसकी कुशलता से संबंधित होता है।

जातक के विषय में अर्थात् उसकी वर्तमान स्थिति क्या है

- लग्न में पाप ग्रह अर्थात् राहू/केतू का होना दर्शाता है कि गुमशुदा व्यक्ति चोर व डाकुओं द्वारा ठगा गया है। यदि लग्न में पीड़ित सूर्य या निर्बली चन्द्रमा स्थित हो तो जातक के शरीर में रोग के प्रभाव की अधिकता है जिस कारण वह सम्पर्क करने में असमर्थ है।
- लग्न, लग्नेश, चन्द्रमा, अष्टम भाव, अष्टमेश यदि पीड़ित है तो लापता व्यक्ति गहरी मुसीबत है तथा उसे जान का खतरा है। इनमें जितने शुभ प्रभाव में होंगे, खतरा उतना कम होगा।
- लग्न से सप्तम भाव में, पंचम भाव में, नवम भाव में यदि पाप ग्रहों की राशियों में दो-दो पाप ग्रह एक साथ होने पर लापता व्यक्ति को बन्धन में दर्शाती है। यदि यहाँ चर राशि में पाप ग्रह है तो वह जातक कहीं दूर स्थान पर बंदी है। यदि स्थिर राशि है तो बन्धन घर के आस-पास कहीं है।
- यदि दो-दो पाप ग्रह 2H, 12H, 5H, 9H, में हो तो वहाँ पर स्थित राशि के अनुसार जातक के बन्धन की अवस्था होती है जैसे मेष व वृष राशियाँ जो कि चतुष्पद राशियाँ हैं, 2H, 5H, 9H, 12H में यदि ये पड़े तो बन्धन रस्सियों से होता है। यदि यहाँ मिथुन राशि पड़े तो जातक को हथकड़ी से, कर्क में कोठरी, सिंह में निर्जन स्थान या जंगल में या कठघरे में होता है।

इसी प्रकार इन भावों में स्थित ग्रह यदि निगड़ द्रेशकान, सर्प द्रेशकान में हो तो भी जातक का बन्धन में होना दर्शाता है।

- यदि लग्न शनि के द्रेशकान में अर्थात् (मकर या कुंभ) हो या लग्न की राशि और निर्बली चन्द्रमा शनि से दृष्ट हो तब भी लापता व्यक्ति बन्धन में होता है।
- यदि शनि पाप ग्रह की राशियों में त्रिकोण में या सप्तम भाव में कहीं भी स्थित हो तब भी जातक का बन्धन में होना दर्शाता है।
- शनि यदि चर राशियों में स्थित है तो जातक बन्धन में है, परन्तु यदि वह मकर राशि में स्थित है तो जातक बन्धन से शीघ्र मुक्त हो जाता

है। यदि वह स्थिर राशियों में है तो कैद में देर तक रहना पड़ता है तथा द्विस्वभाव राशियों में स्थित होने पर कैद न ज्यादा छोटी अवधि की होती है और न ज्यादा लम्बी अवधि की होती है।

- लग्न में पृष्टोदय राशि तथा पाप ग्रहों की स्थिति दर्शाती है कि जातक संकट में है।
- पाप ग्रह 3rd House में दर्शाते हैं कि लापता व्यक्ति का ठिकाना बार-बार बदला जा रहा है।
- पाप ग्रह 6H में पाप दृष्ट जातक की मृत्यु का अंदेशा दर्शाता है।
- शनि का 8H या 9H में पाप दृष्ट होना भी लापता व्यक्ति की मृत्यु का अंदेशा दर्शाता है।
- प्रश्न के समय यदि लग्न बलवान हो, लग्नेश बलवान हो, चन्द्रमा बलवान हो तथा नवांश लग्न का स्वामी यदि बलवान हो तो लापता व्यक्ति के वापस आने की उतनी प्रबल संभावना रहती है। इसमें जितने योग कम होंगे उतनी ही जातक की सकुशलता वापस आने की संभावना कम होगी।
- सूर्य तथा तीन स्वाभाविक शुभ ग्रहों की 12 भाव में स्थिति वापसी नहीं दर्शाती।
- अशुभ दृष्टि से प्रभावित स्थिर लग्न तथा 5, 6, 7 भावों में स्थित पाप ग्रह वापसी न होना दर्शाते हैं।
- पृष्टोदय लग्न अशुभ दृष्ट हो और 5, 7, 9 भावों में पाप ग्रह स्थित हो तो लापता व्यक्ति कठिनाइयों का सामना कर रहा है।
- 8H में युति या दृष्टि द्वारा पीड़ित मंगल या शनि यात्री या उस जातक जिसके विषय में कोई सूचना नहीं है, उसके लिए खतरा है। इसके साथ सूर्य व चन्द्रमा यदि 8 भाव में स्थित हों तो लापता व्यक्ति शास्त्रों के मध्य में खतरे में है।
- नवें भाव में स्थित शनि गुमशुदा व्यक्ति के विषय में यह इंगित करता है कि जातक अधिक बीमार है क्योंकि वहाँ से शनि 6 भाव अर्थात् बीमारी के भाव को दृष्ट करते हैं और वैसे भी शनि बीमारी के कारक हैं।

जातक कैसे गया है - यदि लग्न का या लग्नेश का संबंध चन्द्रमा से हो या चन्द्रमा 7 भाव में 12 भाव में स्थित होकर लग्नेश से संबंध स्थापित करे तो गुमशुदा व्यक्ति अपनी इच्छा से घर छोड़ कर गया है।

कब गया है - लग्न में उदित राशि यदि दिबाबली है अर्थात् 5, 6, 7, 8, 11 हों तो जातक दिन में गया है और यदि रात्रिबली राशि हो तो जातक रात में गया है

लापता यात्री की सकुशलता - 7वाँ भाव रास्ता है जिस पर यात्री अग्रसर है। वहाँ पर शुभ ग्रहों की स्थिति जातक की सकुशलता दर्शाती है।

- लग्न, लग्नेश से 7 वें भाव में स्थित शुभ ग्रह मार्ग में जातक की उपलब्धियों को दर्शाते हैं।
- लग्न में शीर्शोदय राशि शुभ दृष्ट या शुभ ग्रहों की स्थिति भी दर्शाती है कि गुमशुदा व्यक्ति ठीक व सुरक्षित है।
- 7 भाव में शुभ दुरूधरा योग सकुशलता दर्शाता है।
- 4 भाव यात्री की स्थिति दर्शाता है 4H में शुभ ग्रह या उसे दृष्ट करने वाले शुभ ग्रह यह दर्शाते हैं कि जातक आन्नद की स्थिति में है।

जातक की वापसी के योग

- लग्न या तो लग्नेश या शुभ ग्रहों द्वारा बल प्रदान करने के लिए ग्रहित अथवा दृष्ट होना चाहिए। यह लग्न और कार्य सिद्धि के लिए शुभ है।
- केन्द्र और त्रिकोण में शुभ ग्रह तथा पाप ग्रह 12 भाव, 6 भाव में हो।
- लग्न में शीर्शोदय राशि शुभ दृष्ट होने पर वापसी संभव है।
- शुभ ग्रह द्विपद राशियों में 3, 6, 7, 11 में स्थित होने चाहिए।
- 4 भाव में शुभ ग्रह तुरंत वापसी दर्शाते हैं।
- यदि प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा 4 भाव में अन्य अनुकूल संकेतों के साथ स्थित आदि होने पर तुरंत वापसी दर्शाते हैं।
- चन्द्रमा 7 भाव में हो और सप्तमेश किसी राशि की दूसरी होरा में स्थित हो तो यह भी तुरंत वापसी का बहुत सशक्त योग है।
- 7H में चर राशि में चन्द्रमा दर्शाते हैं कि गुमशुदा व्यक्ति वापसी के रास्ते पर है।

- चर लग्न व चर नवांश में स्थित बलि चन्द्रमा यात्री की सकुशल वापसी दर्शाते हैं।
- त्रिकोणों में बुध या शुक्र
- 6th House या 7th House में कोई भी ग्रह तथा केन्द्र में गुरू वापसी के योग हैं।
- 12वें भाव में स्थित लग्नेश का चन्द्रमा के साथ यदि इत्थशाल हो तो भी शीघ्र वापसी का उत्तम योग है।
- चर्तुथ भाव में गुरू, शुक्र, बुध व बली चन्द्रमा होने पर जातक तुरंत वापस आता है।

वापसी का समय

- लग्न से किसी ग्रह द्वारा गृहीत प्रथम राशि तक गिने और 12 से गुणा करे, यात्री उतने दिनों में वापस आता है।
- बलि ग्रह लग्न से जिस भाव में स्थित हो उतने माह में लापता व्यक्ति वापस आता है। यदि वह चर नवांश में है तो उतने दिन में ग्रह स्थिर नवांश में है तो उस राशि को 2 से गुणा करे और द्विस्वभाव नवांश में तो तीन से गुणा करें।
- सप्तमेश जब भी वक्री होगा।
- गोचर में जब सप्तमेश लग्न में आएगें तब भी यात्री वापस आता है।
- चर्तुथ भाव में प्रवेश करने के लिए एक ग्रह को जितने अंशों की आवश्यकता है। उतने ही दिन में व्यक्ति आता है।
- लग्न से चन्द्र स्थित राशी तक गिने जब इन दोनों के मध्य कोई ग्रह न हो उतने दिन में यात्री वापस आता है।